

## ४. दो गजलें

- राजेश रेड्डी

### परिचय

**जन्म :** १९५२, नागपुर (महाराष्ट्र)

**परिचय :** राजेश रेड्डी जी मूलतः हैदराबाद के हैं पर जन्म नागपुर में और परवरिश जयपुर में हुई। आपने हिंदी, अंग्रेजी के साथ-साथ उर्दू भाषा भी बाकायदा सीखी। आप हमेशा जगबीती को आपबीती बनाकर गजल लिखते हैं। आपने गजलों के साथ-साथ नाटक भी लिखे हैं। आप विविध भारती, मुंबई से भी जुड़े थे।

**प्रमुख कृतियाँ :** 'उड़ान', 'आसमान से आगे', 'वजूद' (गजल संग्रह) आदि।

### पद्य संबंधी

यहाँ राजेश रेड्डी जी की दो गजलें दी गई हैं। प्रथम गजल के अधिकांश शेरों में गजलकार हम सभी से कह रहे हैं कि कोई भी कार्य करने के पहले हमें अपने-आपमें जोश, उत्साह, ज्ञान, आत्मविश्वास आदि पैदा करना चाहिए।

दूसरी गजल के शेरों में उन्होंने बचपन की मासूमियत और बड़े होने पर दुनिया-समाज और उनके बीच में परेशान इनसान को बड़े ही मार्मिक ढंग से दर्शाया है।



पहले इक आसमान पैदा कर,  
फिर परों में उड़ान पैदा कर।

अपनी आँखों से जिंदगी को पढ़,  
अपने अनुभव से ज्ञान पैदा कर।

सब्र के पेड़ पर लगेगे फल,  
सोच में इतमीनान पैदा कर।

ऐ खुदा ! जिसमें जी सके इन्साँ,  
कोई ऐसा जहान पैदा कर।

तूने बख्शी है जिंदगी, तू ही,  
जिंदगी में जान पैदा कर।

छोड़ दुनिया से छाँव की उम्मीद,  
खुद में इक सायबान पैदा कर।

दिल से निकले दिलों में बस जाए,  
ऐसी आसाँ जुबान पैदा कर।

× × × ×

यहाँ हर शख्स हर पल हादिसा होने से डरता है,  
खिलौना है जो मिट्टी का, फना होने से डरता है।

मेरे दिल के किसी कोने में इक मासूम-सा बच्चा,  
बड़ों की देखकर दुनिया बड़ा होने से डरता है।

न बस में जिंदगी इसके, न काबू मौत पर इसका,  
मगर इन्सान फिर भी कब खुदा होने से डरता है।

अजब ये जिंदगी की कैद है, दुनिया का हर इन्साँ,  
रिहाई माँगता है और रिहा होने से डरता है।

( 'उड़ान' गजल संग्रह से )

## शब्द संसार

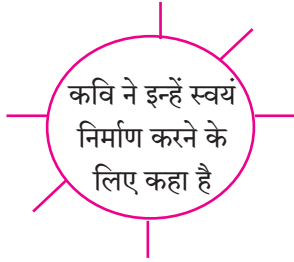
सब्र पुं.सं.(दे.) = सबर, संयम, धैर्य  
 इतमीनान पुं.सं.(अ.) = तसल्ली, ढाढ़स  
 जहान पुं.सं.(फा.) = संसार, जगत  
 जान स्त्री.सं.(फा.) = प्राण, जीवन

उम्मीद स्त्री.सं.(फा.) = आशा, भरोसा  
 सायबान पुं.सं.(फा.) = घर के आगे छाया हेतु  
 बनाया हुआ छप्पर  
 काबू पुं.सं.(तु.) = वश, अधिकार

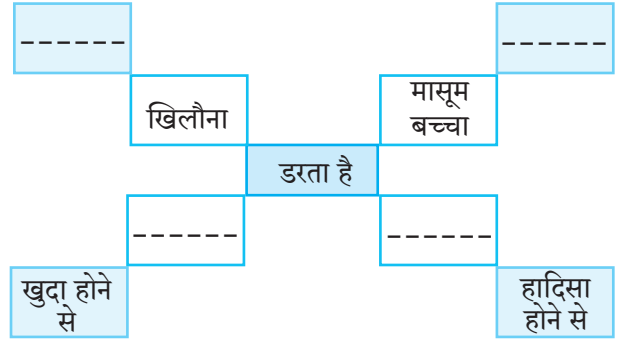
## स्वाध्याय

\* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

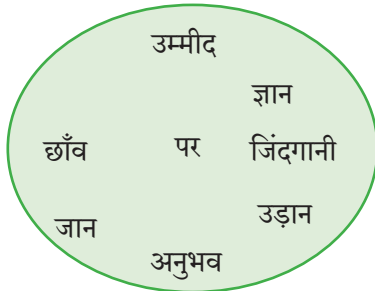
(१) कृति पूर्ण कीजिए :



(२) संजाल पूर्ण कीजिए :



(३) कृति में दिए गजल में प्रयुक्त शब्दों की उचित जोड़ियाँ क्रमशः अ और आ तालिका में लिखिए :



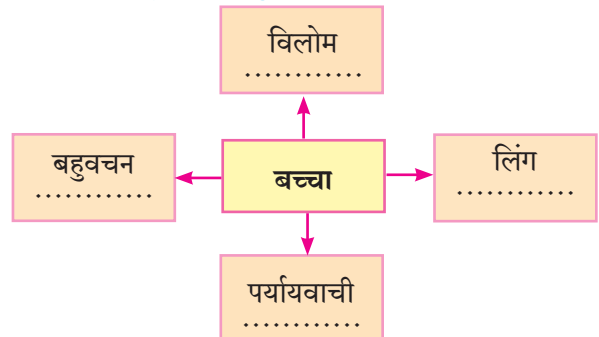
अ	आ
-----	-----
-----	-----
-----	-----
-----	-----

(४) उचित शब्द का चयन करते हुए वाक्य पूर्ण कीजिए :

(मिट्टी, कैद, बंदी, रिहा, छूटना)

- अजब ये जिंदगी की ----- है ।
- रिहाई माँगता है और ----- होने से डरता है ।

(५) सूचना के अनुसार शब्द में परिवर्तन कीजिए :



(६) 'जीवन में डर की जगह सावधानी एवं साहस चाहिए' विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

(१) निम्नलिखित वाक्यों के रचना के अनुसार भेद लिखिए :

१. वह आदमी भी उस गाँव में रहने के लिए तैयार हो गया ।
२. स्टेशन मास्टर ने सिग्नल नहीं दिया और गाड़ी आउटर पर खड़ी रही ।
३. मजे की बात यह है कि एक समाचारपत्र के कितने उपयोग हो सकते हैं ।
४. वह पशु-पक्षियों के बीच बातें करता दिखाई देता ।
५. आप उस गाँव में जाएँगे तो आपको उस खोए हुए आदमी की वहाँ स्थापित मूर्ति दिख जाएगी ।
६. नींद आती रहती है, जाती रहती है और रह-रहकर टूटने के बावजूद उसमें लय बनी होती है ।


(२) पाठों में आए रचना के अनुसार वाक्यों के दो-दो उदाहरण लिखिए ।

(३) निम्नलिखित वाक्यों के अर्थ के अनुसार भेद लिखिए :

- ✦ सुबह उठता हूँ तो थोड़ी ताजगी महसूस होती है ।
- ✦ अरे, वहीं अटके रहोगे, मुझसे बात नहीं करोगे ?
- ✦ कई दिनों से मैं तुम्हारे चौके में नहीं गई ।
- ✦ ठीक है, मुकदमे की कार्यवाही शुरू करें ।
- ✦ अरे ! हवा रानी, नाराज मत हो ।
- ✦ इस बात के लिए ये गाँववाले ही जिम्मेदार हैं ।
- ✦ अधिक वर्षा के लिए कौन जिम्मेदार है ?
- ✦ अच्छा ! निकलती हूँ बस पाँच मिनट चाहिए मुझे तैयार होने के लिए ।
- ✦ हाँ राजीव, आओ बैठो ।
- ✦ यह एक भोले इनसान का विश्वास नहीं था ।


(४) पाठों में आए अर्थ के अनुसार वाक्यों के दो-दो उदाहरण लिखिए ।



उपयोजित लेखन

विज्ञापन :

अपने विद्यालय में आयोजित की जाने वाली  
 क्रीड़ा प्रतियोगिताओं का आयोजक के नाते  
 विज्ञापन तैयार कीजिए :

दिनांक, स्थल, समय

खेल, संपर्क

